ॐ

श्री छहढाला विधान

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य
अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत
मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री छहढाला विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
रचयिता	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास २०२० शिवपुरी (म. प्र.)
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
संस्करण	:	प्रथम
लागत मूल्य	:	२०/-
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान	:	श्री जैनोदय विद्या समूह संपर्क–९४२५१-२८८१७
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

श्री रामस्वरूप जैन (L.I.C)-श्रीमती मंजू जैन
श्री दिनेश जैन (दिनेश गारमेंट्स)
डॉ दीप्ति-डॉ नितिन जैन, कु. झनक (कटंगी)
बा.ब्र. सीमा दीदी (BM BOI), कु. चंचल (BOI)
पुनीत जैन (महरौली वाले) शिवपुरी (म.प्र.)

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं। शिवपुरी में प्रवास के दौरान आगम के आधार पर संयमस्वर्ण महोत्सव मण्डित **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज** के शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत **पूज्य मुनि श्रीसुव्रत-सागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री छहढाला विधान'** की रचना करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति सभी भव्यजीवों के धर्मध्यान करने में सहायक बनेगी। यह एक ऐसा ग्रन्थ है जो कि आगम का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रथम सोपान की तरह सिद्ध होगा। सैद्धान्तिक विषय होने के कारण कहीं-कहीं छन्दों में स्खलन वा कठिनाई महसूस हो सकती है। कृपया सँभाल के पढ़ें।

राजेश बोटा, अर्चित, पुनीत, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, सहज, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहिनें प्राची, एश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद एवं मुनिश्री का आशीर्वाद...। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा- ब्र- संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
१. मंगलाचरण	०४
२. श्री नवदेवता पूजन	०५
३. सिद्ध भक्ति	०९
४. विधान प्रारम्भ मंगलाचरण	१०
५. श्री छहढाला विधान	११
६. श्री प्रथम ढाल अर्घ्यावली	१५
७. श्री द्वितीय ढाल अर्घ्यावली	१७
८. श्री तृतीय ढाल अर्घ्यावली	१९
९. श्री चतुर्थ ढाल अर्घ्यावली	२२
१०. श्री पंचम ढाल अर्घ्यावली	२६
११. श्री षष्टम ढाल अर्घ्यावली	२८
१२. श्री समुच्चय पूर्णार्घ्य	३०
१३. समुच्चय जयमाला	३१
१४. विधान आरती	३२

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥

ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ 8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ 9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्क ाणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

विधान प्रारम्भ

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः -४

श्री जिनशासन में श्रुत धारा, है अखण्ड अलबेली।
सच में यही चेतना की है, साँची सखी सहेली॥
तीर्थंकर यह धार पार कर, भव दुख कर्म नशाएँ।
सो श्री छहढाला को पढ़कर, पूजन पाठ रचाएँ॥१॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः -४

श्री छहढाला के अध्ययन से, मिथ्या पाप नशेगा।
अणुव्रत और महाव्रत रूपी, संयम रत्न सजेगा॥
रोग शोक दुख दर्द हरण कर, सुख समृद्धि होगी।
'विद्या' के 'सुव्रत' की नैया, पार करें जिन योगी॥२॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः -४

तेरा मंगल मेरा मंगल सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ ,कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
श्री छहढाला को नमोऽस्तु कर, सबका मंगल होवे॥३॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः -४

❑ ❑ ❑

श्री छहढाला विधान

स्थापना

(शंभु)

साक्षात देव तो मिले नहीं, ये हम सब का दुर्भाग्य रहा।
जिनबिंब शास्त्र गुरुदेव मिले, ये हम सबका सौभाग्य रहा॥
सो नमन पठन वंदन करके, श्री छहढाला विस्तार रहे।
कुछ पाप घटे कुछ पुण्य बढ़े, 'सुव्रत' निज भाग्य संवार रहे॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन कर, कर नमोऽस्तु धर ध्यान।
श्री छहढाला शास्त्र का, हम करते आह्वान॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

संसार महा दुख सागर में, सब डूब रहे दुख भोग रहे।
सम्यक्त्व नाव पर जो बैठे, भव पार गए सुख भोग रहे॥
सो सम्यक् नैया पाने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
दुख जन्म मरण के हरने को, प्रासुक जल आज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

दुख स्वार्थ भरी जग ज्वाला से, तन-मन कब शीतलतम होते।
दो शब्द प्रेम के सुनकर के, तन-मन चन्दन-चन्दन होते॥
दो शब्द प्रेम के सुनने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
संसार ताप दुख हरने को, यह चन्दन आज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं...।

यदि श्रद्धा मिथ्या होगी तो, अज्ञान हमें भटकाएगा।
यदि श्रद्धा सम्यक् होगी तो, अज्ञान ना कुछ कर पाएगा॥
सो श्रद्धा सम्यक् करने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
भव-भव की भटकन हरने को, यह अक्षत पुंज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

जब ज्ञान-वाटिका लहराए, तो काम कीट तो आएंगे।
पर ब्रह्म-विलास निरख करके, खुद नत मस्तक हो जाएंगे॥

वह ब्रह्म विलास निरखने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
दुख काम कामना हरने को, यह पुष्प समूह समर्पित है॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।
बस उदर पूर्ति ही करने को, हम अपने ज्ञान बढ़ाते हैं।
सो मूलतत्त्व से वंचित हो, भव-भव के रोग बढ़ाते हैं॥
अब मूलतत्त्व को पाने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
यह क्षुधारोग दुख हरने को, पावन नैवेद्य समर्पित है॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।
यदि नहीं भरोसा भगवन पर, तो दीया तले अँधेरा है।
विश्वास अगर प्रभु पर है तो, घर बाहर रोज सबेरा है॥
सो ज्ञान ज्योति प्रकटाने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
मोहान्धकार को हरने को, यह प्रज्ज्वल दीप समर्पित है।
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं...।
है रत्नत्रय का स्वामी पर, जग कर्म-गुलामी बस करता।
दुख बिक न सके सुख मिल न सके, बस कर्म भार ढोता रहता॥
व्रत दीक्षा रत्नत्रय पाने, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
भव कर्मों के बन्धन हरने, यह प्रासुक धूप समर्पित है॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।
मन वचन काय मिल चेतन से, चेतन का सत्यानाश करें।
सो तेरह-विध चारित्र धरें, शुद्धात्म भजें संन्यास धरें॥
निज मृत्यु महोत्सव करने को, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
फिर मोक्ष महाफल पाने को, प्रासुक फल गुच्छ समर्पित है॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।
जब द्रव्य हुए तो भाव नहीं, जब भाव हुए तो द्रव्य नहीं।
संयोगवशात् मिले दोनों, तो गुरु प्रभु का सान्निध्य नहीं॥
अब उपादान की सिद्धि हेतु, श्री छहढाला को नमोऽस्तु है।
निज अनर्घ ध्रुव पद पाने को, यह प्रासुक अर्घ्य समर्पित है॥
ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

श्री देव शास्त्र गुरुओं में भी, श्री छहढाला अनमोल रहा।
सो नमन पठन वन्दन करके, बच्चा-बच्चा जय बोल रहा॥
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर हम चाहें, 'विद्या' गुरुवर दे दो रास्ता।
सो 'सुव्रत' निज कल्याण करें, मजबूत बनाकर निज आस्था॥

(सोरठा)

श्री छहढाला शास्त्र, पढकर हम पूजा करें।
पा संयम ब्रह्मास्त्र, शुद्धातम खोजा करें॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं...।

जाप मंत्र—ॐ ह्रीं श्री छहढाला शास्त्ररूप सम्यग्ज्ञानाय नमः।

जयमाला

(दोहा)

श्री छहढाला शास्त्र है, शास्त्रों का भी सार।
समयसार तत्त्वार्थ है, अनुयोगों का द्वार॥
करें वन्दना वाचना, हरें मोह अज्ञान।
रत्नत्रय को धार के, भक्त बनें भगवान॥

(चौपाई)

जग में सबसे मोह बड़ा है, सबके सिर पर बहुत चढ़ा है।
यह जो दिखता है संसारा, है विस्तार मोह का सारा॥१॥
करवाता होनी अनहोनी, देता लख चौरासी योनि।
मोह जाल में सब जग उलझा, रत्नत्रय बिन कभी न सुलझा॥२॥
सो सम्यक् रत्नत्रय धारें, मिथ्या दुख अज्ञान निवारें।
प्रथम धरो जिन श्रद्धा माला, पढ़ो पढ़ाओ श्री छहढाला॥३॥
यह चारों अनुयोग सिखाता, समयसार यह लघु कहलाता।
यह व्यवहार क्रिया का दाता, निश्चय दे अध्यात्म बताता॥४॥
सो नित पढ़ना श्री छहढाला, निज में गढ़ना श्री छहढाला।
व्यसन छुड़ाए श्री छहढाला, पाप छुड़ाए श्री छहढाला॥५॥
मिथ्या हर्ता श्री छहढाला, सम्यक् करता श्री छहढाला।
कुपथ मिटाए श्री छहढाला, सुपथ दिलाए श्री छहढाला॥६॥

अणुव्रत का धन श्री छहढाला, महा-महाव्रत श्री छहढाला।
शुद्धातम दे श्री छहढाला, केवलज्ञानी श्री छहढाला॥७॥
सिद्धातम दे श्री छहढाला, अनुपम सुख दे श्री छहढाला।
शिव सुख देता श्री छहढाला, भव सुख भी दे श्री छहढाला॥८॥
सो दुखहर्ता श्री छहढाला, समृद्धि दे श्री छहढाला।
रोग शोक हर श्री छहढाला, विश्व शान्ति कर श्री छहढाला॥९॥
सर्वोत्तम है श्री छहढाला, अतः न छोड़ो श्री छहढाला।
'विद्या' पद दे श्री छहढाला, 'सुव्रत' दाता श्री छहढाला॥१०॥

(सोरठा)

श्री छहढाला ज्ञान, वीतराग विज्ञानता।
सो नमोऽस्तु धर ध्यान, हरें कर्म अज्ञानता॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...

(दोहा)

श्री छहढाला जी करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुक्खों को मेंट दो, श्री छहढाला राय॥

(पुष्पांजलिं...)

❑ ❑ ❑

मंगलाचरण

(दोहा)

भवसुख शिवसुख मार्ग दे, वीतराग विज्ञान।
सम्यग्सार स्वरूप को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(इति मण्डलयोस्परि पुष्पांजलिं...)

अर्घ्यावली

श्री प्रथम ढाल अर्घ्यावली

चतुर्गति भ्रमण वर्णन

(लघु चौपाई)

१. जीवस्थान वर्णन

अनन्त विस्तृत है आकाश, बहुमध्य में लोकाकाश।
जिसमें तीन लोक छह द्रव्य, अनन्त प्राणी भव्य अभव्य॥

ॐ ह्रीं जीवस्थान निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. जीव-भेद वर्णन

सिद्ध सुखी दुखमय संसार, दुख से बचने खोजें द्वार।
जिनशासन दे जिसका ज्ञान, सुनो! गुनो!! कर लो कल्याण॥

ॐ ह्रीं जीवभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. संसारी-जीव वर्णन

जग के मूर्तिक जीव अशुद्ध, है अनादि से कर्म विबद्ध।
पंच परावर्तन सो पाएँ, कर्मकथा प्रभु वाँच न पाएँ॥

ॐ ह्रीं संसारीजीव निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४. जीव-यात्रा वर्णन

क्षुद्रक भवदुख नित्य निगोद, सहके पाई थावर गोद।
भू जल आग वायु प्रत्येक, दो-दो भेद वनस्पति एक॥

ॐ ह्रीं जीवयात्रा निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५. त्रस पर्याय की दुर्लभता

त्याग कर्मफल चेतन पाए, दुर्लभ मणि सम त्रस-पर्याय।
कृमि चींटी भ्रमरादि कहाए, विकलत्रय के अति दुख पाए॥

ॐ ह्रीं त्रसपर्याय निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६. पंचेन्द्रिय वर्णन

ज्यों दुर्लभतर मणि संयोग, त्यों पंचेन्द्रिय भव के योग।
अमन-समन के बनें तिर्यंच, निबल-सबल के सहे प्रपंच॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७. तिर्यंच वर्णन

क्षुधा-तृषा सह ढोए भार, छेद-भेद शीतोष्ण अपार।
सह वध-बन्धन दुख संक्लेश, मरे नरक बिल पाये क्लेश॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८. नरक दुख वर्णन एवं मनुष्य पर्याय की दुर्लभता

जहाँ सहे दुख चार प्रकार, आयु सागरों की कर पार।
पाई मनुज योनि पर्याय, दुर्लभतम मणि ज्यों चौराह॥

ॐ ह्रीं नरकदुख निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९. मनुष्य गर्भ वर्णन

मिले पुण्य से माँ का गर्भ, नौ-दस माह सहे दुख दर्द।
उलटे मटके सम लटकाए, मल-मूत्रों में सिकुड़े काय॥

ॐ ह्रीं मनुष्यगर्भ निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१०. मनुष्य पर्याय वर्णन

रोते-रोते पाया जन्म, फिर भी हो परिवार प्रसन्न॥
खेल-खेल में बचपन खोए, यौवन में युवती को रोए॥

ॐ ह्रीं मनुष्यपर्याय निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

११. निष्फल नर पर्याय

प्रौढ़ दशा में घर के भार, ढोकर हुए वृद्ध लाचार।
बिना धर्म नर रत्न गँवाए, मिले सुरों के चार निकाय॥

ॐ ह्रीं निष्फलनरपर्याय निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१२. निष्फल देव पर्याय

भोग-भोग स्वर्गों के भोग, बिन सम्यक्त्व कहाँ सुख योग।
छोड़ स्वर्ग भू-जल तरु होए, दो हजार सागर यों खोए॥

ॐ ह्रीं निष्फलदेवपर्याय निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१३. भवचक्र हर्त्ता भावना

मोक्ष योग्य जब किया न बोध, तब जा पहुँचे इतर निगोद।
सो 'विद्या' 'सुव्रत' नत शीश, कु-चक्र हर-दो प्रभु आशीष॥

ॐ ह्रीं भवचक्र निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

संसार के दुख चक्र में, सुर नर पशु वा नारकी।
भव-वेदना को भोग करके, हैं अनादि से दुखी॥
भवचक्र-चतुगति चक्र हरने, ढाल पहली पढ़ रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमण निरूपक प्रथमढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री द्वितीय ढाल अर्घ्यावली

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र वर्णन

(विष्णु)

१. मिथ्यात्व वर्णन

मिथ्यादर्शन ज्ञान आचरण, ये भव-भव दुख दें।
जिन्हें समझकर सुखेच्छु त्यागें, वे कुछ हम कह दें॥
सात तत्त्व छह द्रव्य आदि की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन दो प्रकार का, जिन गुरु बतलाएँ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. अगृहीत मिथ्यात्व वर्णन

प्रथम भेद है अगृहीत जो, मिथ्योदय से हो।
लक्ष्यभूत जीवादि तत्त्व का, ज्ञान न जिससे हो॥
शुद्ध बुद्ध एकत्व अरूपी, जीव अनन्त गुणी।
फिर भी तन को चेतन माने, वो मिथ्यात्व गुणी॥

ॐ ह्रीं अगृहीतमिथ्यात्व निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. तत्त्वों की विपरीत धारणा

अभिन्न भिन्न अत्यन्त भिन्न जो, अजीव कायों को।
राग द्वेष कर अपना समझे, आस्रव भावों को॥
द्रव्य भाव नौकर्म बन्ध कर, भाव शुभाशुभ हों।
भव तन भोग हितैषी लगते, तो क्या संवर हों॥

ॐ ह्रीं तत्त्व निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४. ज्ञान-चारित्र की विपरीत धारणा

गजस्नानवत् किये निर्जरा, अकाम या सविपाक।
मोक्ष योग्य श्रम ना कर पाए, मिथ्याज्ञान विपाक॥
यों मिथ्या-दृग-ज्ञान आदि की, विषय कषायें जो।
मिथ्या-चारित कहलाती हैं, पाप क्रियायें वो॥

ॐ ह्रीं ज्ञान-चारित्र निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५. गृहीत मिथ्यात्व वर्णन

भेद दूसरा गृहीत मिथ्या-दर्शन अब समझो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म शास्त्र की, श्रद्धा से यह हो॥

स्वरूप से विचलित मत वाले, गुरु सब कुगुरु रहे।
भवसागर में हमें डुबाने, पत्थर नाव कहे॥

ॐ ह्रीं गृहीतमिथ्यात्व निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६. गृहीत मिथ्यात्व का विशेष वर्णन

अस्त्र-शस्त्र तिय वस्त्र आदि धर, जो खुद नाथ हुए।
वे कुदेव उनके अनुयायी, दोनों जगत छुए॥
जिसमें द्रव्य भाव हिंसा की, दुखद प्रतिज्ञा हो।
वो कुधर्म जिसकी श्रद्धा से, गृहीतमिथ्या हो॥

ॐ ह्रीं गृहीतमिथ्यात्वविशेष निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७. गृहीत मिथ्यात्व के भेद

यों त्रय चतु पच आदि तीन सौ, त्रेसठ मत मिथ्या।
संख्य असंख्य अनन्तों भी हों, गृहीत दृग श्रद्धा॥
संशय मोह विपर्यय जिसमें, सभी दोष रहते।
गृहीत मिथ्याज्ञान वही जो, मिथ्यात्वी रचते॥

ॐ ह्रीं गृहीतमिथ्यात्वभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८. मिथ्यात्व त्याग भावना

माया मिथ्या निदान से जो, बिना भेद-विज्ञान।
करें कुतप वह गृहीतमिथ्या, चारित दुख की खान॥
सो मिथ्या-दृग-ज्ञान-चरण तज, सम्यक्ता पाएँ।
'विद्या' धरकर 'सुव्रत' भजकर, शुद्धात्मा ध्याएँ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वत्याग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९. कल्याण हेतु शिक्षा

(दोहा)

मिथ्या चारित ज्ञान तज, होता सम्यग्ज्ञान।
फिर सम्यक्चारित्र धर, बनें सिद्ध भगवान॥

ॐ ह्रीं सिम्यक् शिक्षा निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

मिथ्यात्व-दर्शन-ज्ञान-चारित, तीन भव के हेतु हों।
इनको समझकर त्याग करके, प्राप्त सुख के सेतु हों।
सो त्यागने मिथ्यात्व भव-दुख ढाल दूजी पढ़ रहे॥
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र निरूपक द्वितीयढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

श्री तृतीय ढाल अर्घ्यावली

सम्यग्दर्शन वर्णन

(विद्योदय-मात्रिक)

१. मोक्षमार्ग दर्शन

प्रज्ञावान भव्य जन जिनको, निजहित भाए।
उन्हें कुशल आचार्य गुरु जी, मोक्ष बताए॥
मोक्ष प्राप्ति पथ सम्यग्र्शन, ज्ञान आचरण।
धर साधन व्यवहार साध्य फिर, निश्चय चेतन॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गदर्शन निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. चेतना के प्रकार

शुद्ध अशुद्ध चेतना दो विध, शास्त्र बताएँ।
ज्ञान चेतना शुद्ध सिद्ध वा, अर्हत पाएँ॥
ज्ञाता दृष्टा शुद्ध चेतना, परमातम हैं।
अशुद्ध चेतना दो प्रकार के, जीवातम हैं॥

ॐ ह्रीं चेतनाभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. चेतना के अन्य प्रकार

प्रथम कर्मफल थावर सब हों, मिथ्यादृष्टि।
कर्म-चेतना त्रस पाते हैं, दोनों दृष्टि॥
हर मिथ्यादृष्टि दुख सहते, हैं बहिरातम।
अन्तर आतम त्रिविध जघन्य व, मध्यम उत्तम॥

ॐ ह्रीं चेतना-अन्यभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४. चेतना के स्वरूप

जघन्य मध्यम व्यवहारी जो, मिथ्या हर के।
तत्त्व स्थान नवदेव आदि पर, श्रद्धा करके॥
अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य, अन्तर-आतम।
देशव्रती वा प्रवृत्ति वाले, मुनि हैं मध्यम॥

ॐ ह्रीं चेतनास्वरूप निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५. चेतना के तीन प्रकार

पर के त्यागी शुद्ध-उपयोगी, मुनि हैं उत्तम।
सो हे! आतम तज! बहिरातम, भज! परमातम॥
अन्तर-आतम बनने चर्या, सराग धारो।
सम्यग्दर्शन त्रय प्रकार धर, चरण निखारो॥

ॐ ह्रीं चेतनाभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६. सम्यग्दर्शन के साधन

शिरोधार्य जिन-आज्ञा कर लें, गुरूपासना।
छः सामान्य विशेष गुणों से, जीव समझना॥
अजीव धर्म अधर्म काल नभ, पुद्गल जग में।
पुद्गल रूपी शेष अरूपी, चतुर भंग में॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७. द्रव्य-तत्त्व आदि वर्णन

पुद्गल जीव चलें यदि तो दे, धर्म सहारा।
अगर ठहरना चाहें ये तो, अधर्म द्वारा॥
द्रव्यों के परिणमन वर्तना, काल द्विविध है।
जो अवगाह सभी को दे वो, गगन द्विविध है॥

ॐ ह्रीं द्रव्य-तत्त्व निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८. आस्रव वर्णन

दो चउ छह बीसों इक्कीसों, अठबीस आदि।
त्यागें ये पुद्गल की माया, भवदुख व्याधि॥
तज अजीव अब सत्तावन विध, आस्रव तजिए।
मिथ्याविरति-प्रमाद कषाय व, योग न धरिए॥

ॐ ह्रीं आस्रव निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

पाँच हेतु ये त्याग बन्ध भी, तजें चतुर्धा।
छह कारण से संवर कर तप, करें निर्जरा॥
कर्म नशा के मिले मोक्ष सों, सम्यक् करना।
प्रशम आदि शुभ सराग सम्यक् लक्षण धरना॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-सार्थकता निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१०. सम्यग्दर्शन के दोष

गुण विपरीत दोष शंकादिक, त्यागें आठों।
ज्ञान जाति कुल बल तन धन तप, मद तज आठों॥
कुगुरु कुदेव कुधर्म भक्त षट्, अनायतन तज।
देव लोक गुरु मूढ़ दोष कुल, पच्चीसों तज॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनदोष निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१५. सम्यग्दर्शन के चार अंग

अंग धरें निशंक ज्यों अंजन, दाएँ पग सम।
अनन्तमती सम निःकांक्षित हों, बाएँ पग सम॥
उद्दायन सम निर्विचिकित्सा, बाएँ कर सम।
अमूढ़दृष्टि रेवती जैसे, पीठ अंग सम॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-चतु-अंग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१२. सम्यग्दर्शन के शेष अंग

उपगूहन श्रेष्ठी जिनेन्द्र ज्यों, गुप्तांगों सम।
वारिषेण सम स्थितिकरण हो, दाएँ कर सम॥
हो वात्सल्य विष्णुमुनि ज्यों, वक्ष हृदय सम।
प्रभावना हो वज्रमुनि ज्यों, उच्च शीश सम॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-शेषांग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१३. सम्यग्दर्शन के प्रभाव

आठ अंग तन सम हों सम्यक्, व्यवहारी में।
अतः न जन्में नरक नपुंसक, पशु नारी में॥
दीन हीन कुल अल्प आयु वा, विकलांगों में।
यों अविरत हैं किन्तु जन्म लें, उच्च कुलों में॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनप्रभाव निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१४. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

सम्यग्दर्शन प्रथम चरण हैं, मोक्षमहल के।
इस बिन सम्यग्ज्ञान चरित्रा, कभी न झलके॥
तीन चार भव में सम्यक् से, निज-हित पा लो।
सो जलने के पहले 'सुव्रत', ज्योति जला लो॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-सार्थकता निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

सम्यक्त्व से बढ़कर यहाँ, अनमोल कुछ दिखता नहीं।
ऐसी निधि के सामने कुछ भी, क्षणिक टिकता नहीं॥
सम्यक्त्व को निर्दोष करने, ढाल तीजी पढ़ रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन निरूपक तृतीयढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री चतुर्थ ढाल अर्घ्यावली

ज्ञान व श्रावकचर्या वर्णन

(हाकलिका)

१ सम्यग्ज्ञान उत्पति हेतु

मिथ्यादर्शन त्याग चुके, जिनशासन स्वीकार चुके।
तो सम्यग्दर्शन होगा, सम्यग्ज्ञान तुरत होगा॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान-उत्पत्ति निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में भेद

एक साथ दोनों होते, साधन साध्य भेद होते।
सम्यग्दर्शन है साधन, ज्ञान उसी का साध्य सदन॥

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञानभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. सम्यग्ज्ञान के प्रकार

दो प्रकार के सम्यग्ज्ञान, पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान।
इन्द्रिय मन से ज्ञान कराए, सकल द्रव्य की कुछ पर्याय॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञानभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४. प्रत्यक्षज्ञान के भेद

विकल सकल दो विध प्रत्यक्ष, अवधि मनः विकला प्रत्यक्ष।
प्रत्यक्ष चेतना से मानें, कुछ रूपी सीमित जानें॥

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानभेद निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५. ज्ञान के प्रकार

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, होते क्षायोपशमिक सदय।
क्षायिक केवलज्ञान अमल, निरावरण प्रत्यक्ष सकल॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्रकार निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६. केवलज्ञान की विशेषताएँ

ज्ञानावरणी जब सब जाए, तभी अनन्तानन्त कहाए।
अनन्त द्रव्य के गुण पर्याय, युग पद जाने लख असहाय॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानविशेषता निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७. केवलज्ञान प्रभाव

दर्पण गोखुर बिम्बित ज्यों, लोकालोक झलकते यों।
शीघ्र मोक्ष का अधिकारी, जग में है महिमा न्यारी॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानप्रभाव निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८. ज्ञान अभ्यास हेतु प्रेरणा

अतः ज्ञान अभ्यास करो, आठ अंग में हृदय धरो।
उच्चारण हो शुद्ध भला, शब्दाचार अंग पहला॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाभ्यास-प्रेरणा निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९. ज्ञान-अंग वर्णन

शास्त्र अर्थ सम्यक् करना, अर्थाचार क्रमिक करना।
पढ़कर सही अर्थ करना, उभयाचार चित्त धरना॥

ॐ ह्रीं ज्ञान-अंग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१०. ज्ञान-अंग वर्णन

योग्य समय स्वाध्याय करें, इसको कालाचार कहें।
शास्त्र विनय करके पढ़ना, विनयाचार इसे कहना॥

ॐ ह्रीं ज्ञान-अंग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

११. ज्ञान के अंग

करें त्याग कुछ शास्त्र पढ़ें, ये उपधानाचार कहें।
गुरु श्रुत का बहुमान करें, यह बहुमानाचार धरें॥

ॐ ह्रीं ज्ञान-अंग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१२. ज्ञान के अंग

गुरु श्रुत का ना नाम छिपे, वो अनिह्नवाचार रहे।
ज्ञान अंग ये आठ रहे, बिन संयम दुखभार रहे॥

ॐ ह्रीं ज्ञान-अंग निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१३. ज्ञान प्राप्ति हेतु आवश्यक

सो सम्यक्त्वाचरण करो, कुलाचार धर व्यसन हरो।
पाक्षिक श्रावक स्वीकारो, आठ मूलगुण फिर धारो॥

ॐ ह्रीं ज्ञानप्राप्ति निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१४. चारित्र बिना ज्ञान की असमर्थता

केवलज्ञान मनःपर्यय, बिन चारित्र न हुए उदय।
सो दो विध धर सकल-विकल, गृहियों का चारित्र विकल॥

ॐ ह्रीं चारित्रविहीनज्ञान निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१५. नैष्ठिक श्रावक का वर्णन

अणु-गुण-शिक्षा व्रत के दल, एकदेश-अणुव्रत मंगल।
अणुव्रत पाँच शीलव्रत सात, बारह व्रत नैष्ठिक के साथ॥

ॐ ह्रीं नैष्ठिक-श्रावक निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१६. अहिंसा अणुव्रत का वर्णन

त्रस हिंसा नव कोटि से, जहाँ तजें भव भीति से।
थावर हिंसा सीमित हो, प्रथम अहिंसा अणुव्रत वो॥

ॐ ह्रीं अहिंसा-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१७. सत्य अणुव्रत वर्णन

स्थूल झूठ ना खुद बोलें, ना बुलवाने मुख खोलें।
विपद सत्य प्रतिबन्धित हो, सत्य दूसरा अणुव्रत वो॥

ॐ ह्रीं सत्य-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१८. अचौर्य अणुव्रत वर्णन

रखी गिरी भूली वस्तु, बिना दान दी पर वस्तु।
खुद ना लें ना दें पर को, है अचौर्य अणुव्रत वो॥

ॐ ह्रीं अचौर्य-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१९. ब्रह्मचर्य अणुव्रत का स्वरूप

पर-नारी के निकट कभी, ना भेजें ना जाएँ कभी।
निज-नारी तक सीमित हो, ब्रह्मचर्य का अणुव्रत वो॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२०.परिग्रह परिमाण अणुव्रत स्वरूप

धन धान्यादिक दस परिग्रह, कर सीमित बहु ना संग्रह।
इच्छा-मूर्च्छा सीमित हो, परिग्रह परिमाण अणुव्रत वो॥

ॐ ह्रीं परिग्रहपरिमाण-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२१. गुणव्रत का स्वरूप

अणुव्रत का जो उपकारी, गुणव्रत तीन भेद धारी।
गुणव्रत में दिग्व्रत पहला, दिशा सीम कर बाह्य न जा॥

ॐ ह्रीं दिग्व्रत-अणुव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२२. देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत का स्वरूप

उसमें काल क्षेत्र कम कर, धरें देशव्रत जीवन भर।
बिना प्रयोजन कर्म तजें, अनर्थदण्ड व्रत पाँच गहें॥

ॐ ह्रीं देशव्रत-अनर्थदण्डव्रत-गुणव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२३. शिक्षा व्रत का स्वरूप

मुनिव्रत की शिक्षा दें जो, चार तरह शिक्षाव्रत वो।
पहला सामायिक करना, पाप त्याग समता धरना॥

ॐ ह्रीं सामायिक-शिक्षाव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२४. प्रौषध-भोग-उपभोग स्वरूप

पर्व अष्टमी चौदस को, प्रौषध का उपवास करो।
भले रहे आवश्यकतम, करें भोग उपभोग नियम॥

ॐ ह्रीं प्रोषध-भोगोपभोग-शिक्षाव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२५. अतिथिसंविभाग व्रत स्वरूप व अतिचार

मुनि की पूर्ण व्यवस्था कर, अतिथिसंविभाग व्रत धर।
पाँच-पाँच तज व्रत-अतिचार, अंत समय सल्लेखन धार॥

ॐ ह्रीं अतिथिसंविभाग-शिक्षाव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२६. साधक श्रावक स्वरूप

साधक श्रावक बनकर के, करना समाधि व्रत धर के।
सोलहवें तक स्वर्ग सिधार, स्वर्ग त्याग हों नर अनगार॥

ॐ ह्रीं साधकस्वरूप निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२७. मुनि से मोक्ष स्वरूप

मुनि अरिहन्त जिनेन्द्र बनें, समवसरण से धर्म कहें।
ध्यान लगा निर्वाण गहें, सो 'सुव्रत' मुनि धर्म कहें॥

ॐ ह्रीं मुनि-मोक्षस्वरूप निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

अज्ञान ने पथ-भ्रष्ट कर, चारित्र ना लेने दिया।
पर ज्ञान ने चारित्र देकर, धर्म ना डिगने दिया॥
व्रत ज्ञान सम्यक प्राप्त करने, ढाल चौथी पढ़ रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं ज्ञान व श्रावकचर्या निरूपक चतुर्थढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री पंचम ढाल अर्घ्यावली

बारह भावना

(दोहा)

१. अनित्य भावना

रिश्ते नाते सम्पदा, तन बल भोग अपार।
हैं अनित्य सब कुछ यहाँ, क्षणभंगुर संसार॥

ॐ ह्रीं अनित्य-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. अशरण भावना

कौन बचाए मृत्यु से, हवा दवा विज्ञान।
इस अशरण संसार में, शरण भेद विज्ञान॥

ॐ ह्रीं अशरण-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. संसार भावना

देव नारकी नर पशु, सब भोगें दुख भोग।
मोक्ष बिना संसार में, कहीं न सुख संयोग॥

ॐ ह्रीं संसार-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४. एकत्व भावना

नहीं किसी के हम यहाँ, कोई न अपना यार।
यह एकत्व विचार के, आत्म-तत्त्व ही सार॥

ॐ ह्रीं एकत्व-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५. अन्यत्व भावना

जब तन भी अपना नहीं, फिर क्यों करते पाप।
यम के आगे ना चले, कुछ अन्यत्व विलाप॥

ॐ ह्रीं अन्यत्व-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६. अशुचि भावना

मल-मूत्रों की देह दे, सूतक-पातक शोर।
दीक्षा बिन सब व्यर्थ है, अशुचि देह की डोर॥

ॐ ह्रीं अशुचि-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७. आस्रव भावना

सत्तावन विध से रचें, हम अपना संसार।
कर्मास्रव को रोक के, होगी नैया पार॥

ॐ ह्रीं आस्रव-भाना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८. संवर भावना

जीवन-रथ पर सारथी, संवर हुआ सवार।
गजरथ से आतम गयी, मोक्षपुरी के द्वार॥

ॐ ह्रीं संवर-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९. निर्जरा भावना

कर्म-कालिमा ने दिया, निज का रूप विगार।
तप-उबटन की निर्जरा, करे आत्म शृंगार॥

ॐ ह्रीं निर्जरा-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१०. लोक भावना

स्वयं सिद्ध नर रूप सम, लोक रहा भ्रम जाल।
इसमें भटकें जीव सब, धर्म बिना बेहाल॥

ॐ ह्रीं लोक-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

११. बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ सम्यग्दर्श है, दुर्लभ सम्यग्ज्ञान।
दुर्लभ मुनि चारित्र सो, तजें मोह अज्ञान॥

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभ-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१२. धर्म भावना

दुख दें मिथ्यामत सभी, लगते धर्म समान।
धर्म मात्र जिनधर्म है, भक्त करे भगवान॥

ॐ ह्रीं धर्म-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१३. उपसंहार

भाकर बारह भावना, होता दृढ़ वैराग्य।
'सुव्रत' देवर्षि बनें, करें मुक्ति से राग॥

ॐ ह्रीं बारह-भावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

दुर्भावना संसार दुख है, मोक्ष सुख सद्भावना।
सो विश्व के कल्याण हेतु, ध्याएँ बारह भावना॥
अध्यात्म की शुभ भावना को, ढाल पंचम पढ़ रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं बारहभावना निरूपक पंचमढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

श्री षष्टम ढाल अर्घ्यावली

मुनिचर्या वर्णन

(ज्ञानोदय)

१. मोक्षमार्ग स्वरूप

है संसार असुख तो सुख क्या, कहाँ मिले किस साधन से।
भव्य जीव की यह जिज्ञासा, शांत हुई गुरु भगवन से॥
सुख है मोक्ष मिले निज में जो, मोक्षमार्ग के साधन से।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रा, मोक्षमार्ग बनता इनसे॥

ॐ ह्रीं मोक्षमार्ग स्वरूप निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

२. सकल चारित्र वर्णन

सम्यग्दर्शन दो प्रकार का, साधन प्रथम सराग हुआ।
साध्य दूसरा वीतराग जो, मुनिव्रत धरकर सिद्ध हुआ॥
सो सराग सम्यग्दर्शन धर, वीतराग का यत्न करो।
धरो सकल चारित्र महाव्रत, मुनि बनकर शिव साध्य वरो॥

ॐ ह्रीं सकलचारित्र निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

३. मुनि मूलगुण वर्णन

धारो अट्ठाईस मूलगुण, जिनमें पाँच महाव्रत हैं।
पाँच समिति इन्द्रिय जय पाँचों, सात शेष आवश्यक छै॥
द्रव्य भाव सब हिंसा तजना, प्रथम अहिंसा महाव्रत है।
दुखद सत्य हर झूठ त्यागना, दूजा सत्य महाव्रत है॥

ॐ ह्रीं मुनिमूलगुण निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

४ . महाव्रत वर्णन

बिन दी वस्तु कभी न लेना, तीजा अचौर्य महाव्रत है।
नव कोटि से स्त्री तजना, ब्रह्मचर्य ये महाव्रत है॥
मोह संग-उपकरण त्यागना, परिग्रह त्याग महाव्रत है।
चार हाथ भू अग्र देखकर, दिन में गति ईर्यापथ है॥

ॐ ह्रीं महाव्रत निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

५ . समिति वर्णन

हित-मित आगम सहित बोलना, सुखकर भाषा समिति यही।
बोधि हेतु आहार शुद्धि ही, शुद्ध ऐषणा समिति रही॥
लें रक्खें उपकरण देखकर, आदान निक्षेपण समिति।

दोष रहित मल मूत्र आदि का, त्याग रहा व्युत्सर्ग समिति॥

ॐ ह्रीं समिति निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

६ . पंचेन्द्रिय-जय व आवश्यक

स्पर्श श्रोत्र रस चक्षु नासिका, ये पंचेन्द्रिय जय करना।
समता धर सामायिक करके, चौबीसी की थुति करना॥
करें वन्दना प्रतिक्रमण फिर, स्वामी प्रत्याख्यान करें।
कायोत्सर्ग करें मूर्छा तज, षट्-आवश्यक रोज करें॥

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियजय-आवश्यक निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

७ . शेष मूलगुण वर्णन

केशलोंच अस्नान नग्नता, थिति-भोजन क्षिति-शयन करें।
अदन्तधावन एक भुक्ति ये, सात शेष गुण ग्रहण करें॥
जैनधर्म के पता-पताका, चलते-फिरते तीर्थ-मुनि।
धारें तप दस धर्म भावना, बाईस परिषह सहें मुनि॥

ॐ ह्रीं शेषमूलगुण निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

८ . तेरह प्रकार चरित्र वर्णन

तेरहविध-चारित्र धार ज्यों, ध्यान गुप्ति आसीन हुए।
षट्-कारक के भेद मिटे त्यों, शुद्ध बुद्ध निज लीन हुए॥
वीतराग सम्यग्दर्शन ये, रहा शुद्ध उपयोग यही।
यही स्वरूपाचरण-चरित्रा, निश्चय रत्नत्रय है यही॥

ॐ ह्रीं चारित्र निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

९ . शुद्धोपयोग के स्वामी वर्णन

कायोत्सर्ग दशा निर्वृत्ति, में मुनियों को सम्भव ये।
वस्त्रधारि को कभी न होता, अतुलनीय आतम-सुख ये॥
मुनिमुद्रा का दर्शन दुर्लभ, भव्य जीव को धन्य करे।
अभव्य जीवों को प्रभु जैसा, कहाँ मिले कब धन्य करे॥

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोग-स्वामी निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१०. शुद्धोपयोग का प्रभाव

यों एकत्व-विभक्त आतमा, ज्ञाता-दृष्टा गुण-श्रेणी।
नय निश्चय व्यवहार पक्ष बिन, ध्याकर चढें क्षपकश्रेणी॥
घाति हरण कर बने केवली, समवसरण अरिहन्त हुए।
दिव्यध्वनि दे तीर्थ प्रवर्तन, करके सिद्ध महन्त हुए॥

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोग-प्रभाव निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

११ . सिद्ध स्वरूप वर्णन

सिद्धों का क्या कहना भैया, अनुपम गति ध्रुव अचल रहे।
भव-शव-यात्रा विफल बनाकर, शिवयात्रा में सफल रहे॥
रहें अनन्तानन्त काल तक, प्रभु लोकाग्र शिखर धामी।
त्रय जग में संहार मचे पर, टस से मस ना हों स्वामी॥

ॐ ह्रीं सिद्धस्वरूप निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१२ . मनुष्य पर्याय की सार्थकता

नर-पर्याय धन्यकर डाली, धन्य चार पुरुषार्थ किए।
पंच परावर्तन दुख त्यागे, सार्थक निज परमार्थ किए॥
अनादि के मिथ्यादर्शन वा, मिथ्याज्ञान चरित तज के।
भेदाभेद धार रत्नत्रय, मोक्ष गये आतम भज के॥

ॐ ह्रीं मनुष्यपर्याय-सार्थकता निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

१३. लेखक की अंतिम धर्मभावना

हमको पंचमकाल मिला तो, मोक्ष योग्य श्रम कर ना सकें।
किन्तु महाव्रत अणुव्रत धरके, दुर्गति से तो बच हि सकें॥
इतना भी यदि करन सकें तो, सम्यग्दर्शन प्राप्त करें।
फिर 'विद्या' के 'सुव्रत' बनकर, भव का भ्रमण समाप्त करें॥

ॐ ह्रीं अंतिमभावना निरूपक-श्री छहढाला शास्त्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

सर्वोच्च मुनि निर्ग्रंथ जो, अरिहंत पद को प्राप्त हों।
फिर सिद्ध सुख को भोगते, जो कर्मचक्र समाप्त हों॥
निजमोक्ष पाने कर्म हरने, ढाल षष्टम पढ़ रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

ॐ ह्रीं मुनिचर्या निरूपक षष्टमढालरूप-श्री छहढाला शास्त्राय पूर्णार्घ्यं...।

❑ ❑ ❑

समुच्चय पूर्णार्घ्य

श्रद्धा बिना ना ज्ञान होगा, ज्ञान बिन चारित्र ना।
चारित्र बिन ना ध्यान होगा, ध्यान बिन निर्वाण ना॥
सिद्धान्त यह दृढ़तर बने, स्वाध्याय सम्यक कर रहे।
'सुव्रत' श्री छहढाल को करके, नमोऽस्तु भज रहे॥

(सोरठा)

श्री छहढाला ग्रन्थ, आगम का भण्डार है।
सो पढ़ने यह मंत्र, नमोऽस्तु बारम्बार है॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये समुच्चय पूर्णार्घ्यं...।

जाप मंत्र—ॐ ह्रीं श्री छहढाला शास्त्ररूप सम्यग्ज्ञानाय नमः।

समुच्चय जयमाला

(ज्ञानोदय)

जो इस आतम को अनादि से, प्राप्त हुआ वह अपना है।
यही धारणा दुख देती है, सुख तो केवल सपना है॥
लेकिन जो सुख के सपने को, चाह रहे साकार करें।
वो अनादि की परम्परा यह, कभी नहीं निर्वाह करें॥१॥
सो अनादि की परम्परा जो, मिथ्या आदि विकारी हैं।
उन्हें त्यागना चाह रहे जो, वे सुख के अधिकारी हैं॥
पर मजबूत बनाने होंगे, सदाचार श्रद्धा वा ज्ञान।
सो स्वाध्याय करें शास्त्रों का, तभी मिटेगा मिथ्याज्ञान॥२॥
बड़े-बड़े ग्रन्थों का पढ़ना, अगर न लगता हो आसान।
तो कम से कम श्री छहढाला, पढ़कर पाओ सम्यग्ज्ञान॥
जिससे सम्यक् मार्ग मिलेगा, सत्य सामने आएगा।
दुख पापों में उलझा चेतन, सुखी स्वस्थ हो जाएगा॥३॥
सो दुनियाँ में रहने वालो!, इतना तो पुरुषार्थ करो।
कुछ तो समय निकालो निज को, श्री छहढाला शास्त्र पढ़ो॥
जिससे विश्वशान्ति भी होगी, दुनिया सुख से महकेगी।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' की, आत्मशान्ति भी झलकेगी॥

(सोरठा)

श्री छहढाला पाठ, देता सम्यग्ज्ञान को।
सो नमोऽस्तु नत माथ, हम चाहें निर्वाण को॥

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान रूप श्री छहढाला शास्त्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

श्री छहढालाजी करे, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुखों को मेंट दो, श्री छहढाला राय॥
(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

(दोहा)

कोरोना के काल में, याद किए गुरु मंत्र।
लिखा जनागम रूप में, श्री छहढाला ग्रन्थ॥१॥
अल्पबुद्धि छद्मस्थ मैं, श्रुत सिद्धान्त अपार।
कमियाँ अतः सुधार के, शुद्ध पढें हों पार॥२॥
स्वतंत्रता दिवस शिवपुरी, शनि दो हजार बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥३॥
(इति शुभम् भूयात्)

❑ ❑ ❑

श्री छहढाला आरती

(लय–छूम छूम छना नना)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया, बाबा करूँ आरतिया॥ छूम-छूम...

श्री छहढाला ग्रन्थराज को, जैनागम के सूत्र साज को।
आठ अंगमय वांचें-बाबा करूँ आरतिया॥१॥ छूम-छूम...

जिनवाणी की अविरल धारा, द्वादशांग का श्रुत विस्तारा।
आचार्यों की वाणी-बाबा करूँ आरतिया॥२॥ छूम-छूम...

तत्त्वदेशना ज्ञान-साधना, भक्त-भावना विनय-प्रार्थना।
सबका संग अनोखा-बाबा करूँ आरतिया॥३॥ छूम-छूम...

जग के सारे काम बनाए, मोक्षमहल तक हमें घुमाए।
'सुव्रत' को भी थामें-बाबा करूँ आरतिया॥४॥ छूम-छूम...

❑ ❑ ❑